डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

रत्नावली की कथा वस्तु

रत्नावली नाटिका कौशाम्बी नरेश राजा उदयन से सम्बद्ध है। यह चार अंकों में निबद्ध है। सिंहलेश्वर विक्रमबाहु की कन्या अनिन्द्य सुन्दरी 'रत्नावली' इसकी नायिका है। अतः इस नाटिका का नाम भी नायिका के नाम पर ही पड़ा व रखा गया है जो उपयुक्त भी है। इसकी कथावस्तु इस प्रकार है-

प्रथम अंक

कौशाम्बी नगर में मदनमहोत्सव मनाया गया। स्त्री पुरुष सभी मदन-महोत्सव को मनाने में लीन हो गये। चारों ओर अबीर गुलाल उड़ाया जाने लगा। इधर रानी वासवदत्ता मकरन्दोद्यान में खड़े अशोक वृक्ष के नीचे मदन-पूजन के लिए गई। सेविका सागरिका जो कि सारिका रक्षा के बहाने मकरन्दोद्यान में जाने से रोक रखी गई थी, अन्य दासियों एवं सखियों के साथ वह भी मकरन्द उद्यान में पहुँच जाती है। कामदेव के पूजा समारोह में मदनोद्यान में आने के लिए वासवदत्ता महाराज उदयन से भी निवेदन करती है तथा महाराज विदूषक के साथ वहाँ पहुँचते हैं। सभी काम-पूजन में तत्पर होती है। उसी समय वहाँ अन्य परिचारिकाओं के साथ सागरिका का भी वहाँ आना ज्ञात हो जाता है। वासवदत्ता सागरिका को पुनः सारिका की रक्षा के लिए अन्तःपुर जाने को कहती है। परन्तु वहाँ से हटकर उत्सुकतावश सागरिका वृक्षों की आड़ में काम पूजन को देखने की चेष्टा करती है। तब काम के रूप में राजा उदयन की पूजा की जाती है। तो वह (राजा उदयन) सागरिका को साक्षात् कामदेव जैसे सुन्दर दिखाई पड़ते हैं।

सागरिका स्वयं कामपूजा के लिए फूल चुनती है। वह भी कामदेव के व्याज से फूल चढ़ा देती है और उसी समय वैतालिक की स्तुति से उसे यह ज्ञात होता है कि यही महाराज उदयन हैं जिनके लिए पिता ने उसे अर्पित किया है। सागरिका राजा उदयन पर आसक्त हो जाती है।

द्वितीय अंक — राजा उदयन पर अनुरक्त सागरिका सखी सुसंगता से छिपकर कदली गृह में बैठकर राजा उदयन का चित्र बनाती है। परन्तु सुसंगता उसे खोजती हुई वहीं आ जाती है वह इस रहस्य को सुसंगता से छिपाना चाहती है। परन्तु वह यह सब जान जाती है और राजा के समीप ही सागरिका का भी चित्र बना देती है। सुसंगता के आग्रह करने पर सागरिका अपनी विरह कथा सुसंगता को बता देती है। वहीं पर पिंजड़े में बन्द मैथाविनी सारिका दोनों का वार्तालाप सुनकर रट लेती है। इतने में एक वानर आ जाता है और सारिका के पिंजड़े को खोल देता है। सारिका पिंजड़े से उड़कर बकुल वृक्ष पर बैठकर सागरिका एवं सुसंगता के वार्तालाप को ही दोहराती है। श्री खण्डदास के द्वारा सींचे हुए दोहद के प्रभाव से अकाल पुष्पित नव मालिका को देखने के लिए इसी समय राजा उदयन रानी वासवदत्ता के साथ मकरन्द उद्यान को आज जाते हैं। उधर वे दोनों सारिका द्वारा दोहराया गया सागरिका तथा सुसंगता का वार्तालाप सुनते हैं तथा भयभीत होकर कदलीकुंज से सागरिका तथा सुसंगता के जाते समय चित्रफलक वहीं रह जाता है। राजा उस चित्रफलक को देख लेते हैं, उस कदली गृह में कमलिनी शय्या, मृणालहार तथा चित्रफलक से राजा को सागरिका की कामदशा का आभास हो जाता है, इतने में सुसंगता चतुरता से वहीं पर लताकुञ्ज में उदयन को सागरिका से मिला देती है। इसी बीच महारानी वासवदत्ता भी उसी स्थान पर आ जाती है और उस चित्रफलक को देख लेती है और क्षुब्ध हो चली जाती है। राजा के बार-बार मनाये जाने पर भी वह शिरोवेदना के व्याज से वहाँ से चली जाती है। विदूषक के साथ राजा भी उसे मनाने अन्तःपुर चले जाते हैं।

तृतीय अंक :— कदलीगृह में सागरिका से मिलने के पश्चात् राजा उदयन उस पर अनुरक्त हो जाता है तथा वह निरन्तर सागरिका लिए दुःखी रहने लगता है। मित्र वसन्तक (विदूषक) सुसंगता से मिलकर सागरिका को राजा से मिलवाने की योजना बनाता है। इस योजनानुसार सागरिका को वासवदत्ता का और सुसंगता को रानी की सखी कांचनलता का वेष बनाकर प्रदीप काल में माधवीलता मण्डप में उदयन से उसका मिलन कराना था। परन्तु रानी वासवदत्ता किसी प्रकार यह योजना जान लेती है तथा कांचनलता के साथ उस निश्चित समय पर स्वयं माधवी-लता मण्डप में पहुँच जाती है। सागरिका प्रेम में आतुर राजा उदयन रानी को सागरिका ही समझकर उसका नाम लेकर पुकारने लगते हैं तथा सागरिका विषयक ही प्रेमालाप करने लगते हैं। राजा के इस अशिष्ट व्यवहार से खिन्न होकर वासवदत्ता अपने को प्रकट कर देती है। राजा वासवदत्ता के पैरों ~~के~~ में पड़कर उससे अनुनय विनय करने लगते हैं परन्तु रानी न मानकर क्रुद्ध होकर वहाँ से चली जाती है। इधर सागरिका भी योजनानुसार नियत समय पर माधवीलता मण्डप में पहुँचती है तथा योजना के प्रकट हो जाने की सूचना पाकर अपमान भय से आत्महत्या करने का प्रयास करती है।

वासवदत्ता वेषधारिणी सागरिका की आत्महत्या का प्रयास करते देखकर उसे रानी ही समझ कर रक्षार्थ मित्र वसन्तक राजा को बुलाता है। जब राजा वासवदत्ता के वेष में सागरिका को पाता है तो वह प्रसन्न हो जाता है तथा उससे पूर्व वासवदत्ता के प्रति किये गये प्रेमालाप की वह सेवा मात्र बताने लगता है। उधर राजा को अनुनय विनय कर तिरस्कार कर चले जाने पर पुनः वासवदत्ता को अपने कृत्य पर पश्चाताप होता है तथा वह पुनः मकरन्द उद्यान को आती है परन्तु वहाँ आकर जब वह पुनः राजा और सागरिका को प्रेमालाप करते देखती है तो क्रुद्ध होकर इस नाटक का उत्तरदायी वसन्तक को समझ कर उसे माधवीलता से बँधवा कर वसन्तक तथा सागरिका दोनों

को साथ लेकर अन्तःपुर को चली जाती है। कुछ समय पश्चात् वसन्तक को छोड़ देती है परन्तु सागरिका को किसी अज्ञात स्थान पर कैद रखकर यह प्रचार कर देती है कि महारानी ने सागरिका को उज्जयिनी भेज दिया है।

चतुर्थ अंक → अन्तःपुर में कैद किए जाने पर सागरिका निराश होकर सुसंगता से माला (रत्नमाला) किसी ब्राह्मण को देने के लिए कहती है। सुसंगता माला लेकर जाती है तथा ब्राह्मण वसन्तक के मिल जाने पर वह इसे ही दे देती है। वसन्तक रत्नमाला लेकर राजा के पास पहुँचाता है। राजा रत्नमाला देखकर सागरिका को याद कर दुःखी हो जाता है। इसी समय उसके सेनापति रुमण्वान् का भांजा विजयवर्मा आकर सेनापति द्वारा विन्ध्य दुर्ग में स्थित कोसल राज्य पर विजय प्राप्त करने का समाचार बताता है। जिससे राजा को कुछ धैर्य होता है। उसी समय उज्जयिनी से एक ऐन्द्रजालिक जादूगर (यौगन्धरायण द्वारा किया गया प्रयोग।) आकर राजा से खेल ~~देखने~~ के देखने के लिए कहता है। राजा रानी वासवदत्ता के साथ खेल देखने लगते हैं। इतने में सिंहलेश्वर के अमात्य वसुभूति तथा पाम्रव्य कंचुकी के आ जाने पर राजा थोड़ी देर खेल बन्द रखने के लिए ऐन्द्रजालिक (जादूगर) से कह देता है। परन्तु वह राजा से यह कहता हुआ कि "आपको मेरा कम से कम एक खेल अवश्य देखना चाहिए" चला जाता है। वसुभूति राजकुमारी रत्नावली के समुद्र में डूबने की कहानी सुनाने लगता है, उसी समय अन्तःपुर में आग लगने का दृश्य दिखाई पड़ता है। आग की ऊँची-ऊँची लपटें मालूम पड़ती है। रानी वासवदत्ता अन्तःपुर में कैदकर रखी गई सागरिका को आग में जल जाने के भय से व्याकुल हो राजा से उसे बचाने के लिए प्रार्थना करती है राजा आग में कूदकर सागरिका को बन्धन से छुड़ा तथा आग से बचाकर निकाल देता है।

वसुभूति उसकी आकृति रत्नावली से मिलती जुलती देखकर उसे रत्नावली ही मान बैठता है तथा वसन्तक के पास की रत्नमाला से इसकी पुष्टि हो जाती है। इसी अवसर पर मन्त्री यौगन्धरायण भी वहाँ आ जाते हैं तथा रत्नावली को राजा से मिलाने की सम्पूर्ण योजना को प्रकट कर देते हैं। तथा एतदर्थ राजा से क्षमा याचना करते हैं। रानी वासवदत्ता सागरिका को अपनी बहन रत्नावली समझ लेती है और उसे कष्ट देने के लिए पश्चाताप करती है। पुनः राजा को स्वयं अपनी बहन रत्नावली सौंपकर उसकी इस प्रकार रक्षा करने के लिए वह राजा से प्रार्थना करती है कि जिससे रत्नावली को प्रेम व्यवहार से युक्त होकर अपने बन्धुजनों की याद न सता सके।

—x—